ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 233-235**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

भारतीय समाज में महिला उच्च शिक्षा की भूमिका एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. प्रकृति कुमारी
2. प्रो0 सुभी धूसिया

1. शोध अध्येत्री, 2. शोध निर्देशिका– समाजशास्त्र विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-20.06.2025, Revised-27.06.2025, Accepted-02.07.2025 E-mail : prakritiprakriti10@gmail.com

सारांशः मनुष्य को मनुष्य बनने वाले प्रमुख तत्वों में से ज्ञान एक प्रमुख तत्व है। ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा है। जिस प्रकार ज्ञान का क्षेत्र अति व्यापक है उसी प्रकार शिक्षा का क्षेत्र भी अति व्यापक आधार लिए हुए हैं। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक सुकरात अपनी कृति 'वर्ड्स आफ़ विजडम' में कहते हैं कि – 'Virtue is Knowlege' अर्थात् सुदृढ़ ही ज्ञान है। तात्पर्य यह है कि शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करके ही व्यक्ति सुदृढ़ बनता है और उसके चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षा ही व्यक्ति को सभी सांसारिक बंधनों से मुक्ति कराती है इसलिए कहा गया है कि "सा विघा या विमुक्तये" शिक्षा व्यक्ति , विभिन्न सामाजिक वर्गों तथा विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त असमानताओं को समाप्त कर एक ज्ञानवान समाज की रचना हैं।[1]

कुंजीभूत शब्द– मनुष्य, शिक्षा, ज्ञान, सामाजिक वर्ग, असमानता, समाज, शिक्षा का इतिहास, सुसंस्कृत, योग्य नागरिक

प्रस्तावना– किसी समाज में सदैव चलने वाली उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण–प्रतिक्षण नए–नए अनुभव प्राप्त करता हैं व करवाता है, जिससे उसका दिन–प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता हैं। उसका यह सिखना या सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र–प्रतिकाओं द्वारा औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से होता है यही सीखना–सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप के अंतर्गत आता हैं।

किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षा के इसी संदर्भ को लिया गया है।

शिक्षा की परिभाषाएं– शिक्षा के वास्तविक अर्थ पर प्रकाश डालने के बाद ही स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा विकास की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है फिर भी इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की हुई परिभाषाएं निम्नलिखित हैः

- रूसो (डिसकोर्स ऑन दि ओरिजिन का इनइक्वैलिटी, 1755) "शिक्षा वह जो व्यक्तियों के अंदर से प्रस्फुटित होती है, वह व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है।"[2]
- फ्रोबेल (द एजुकेशन आफ़ मैन, 1826) "शिक्षा मनुष्य के अंदर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।"[3]
- हर्बर्ट स्पेंसर (एजुकेशन, 2007) "शिक्षा से तात्पर्य है अंतर्निहित शक्तियों तथा बाह्य जगत के मध्य सामजस्य स्थापित करना है।"[4]
- डॉक्टर जाकिर हुसैन के अनुसारः "किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क का पूर्ण रूप से विकास शिक्षा कहलाता है।"[5]
- गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर, (गीतांजलि, 1910) "शिक्षा का अर्थ है मस्तिष्क को इस योग्य बनाना कि वह सत्य की खोज कर सके तथा उसको व्यक्त कर सकें।"[6]
- महत्मा गाँधी के अनुसार– "शिक्षा से तात्पर्य उस प्रक्रिया से हैं जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, आत्मा एवं मन का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके"।[7]

भारत में उच्च शिक्षा– उच्च शिक्षा को आर्थिक वृद्धि, तकनीकी विकास, समान अवसरों के माध्यम तथा सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि को प्रोत्साहित करने के माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया हैं। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली विश्व की उच्च शिक्षा प्रणालियों में से एक है । भारत में उच्च शिक्षा कार्यक्रम को दो भागों में बता गया हैः एक तरफ सामान्य शिक्षा जैसे कला जिसमें सामाजिक विज्ञान, मानविकी तथा विशुद्ध विज्ञान है तथा दूसरी ओर व्यावसायिक शिक्षा जैसे इंजीनिरिंग, मेडिकल, साइंस, आर्किटेक्चर, शिक्षण प्रशिक्षण, कृषि, कानून आदि विषय शामिल है ।

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, राष्ट्रीय महत्व के संस्थान जैसे आई.आई.टी., आई. टी. आई., डीम्ड विश्वविद्यालय शामिल हैं। अभी तक देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक प्रगति हुई हैं। वर्तमान समय में कुल 711 विश्वविद्यालय हैं। जिसमें 46 क्रेन्द्रीय, 329 राज्यीय, 205 राज्य निजी तथा 128 डीम्ड विश्वविद्यालय हैं। 3 संस्थानों की स्थापना राज्य प्रावधनों के तहत की गई हैं तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 40760 महविद्यालय शामिल हैं । 2014–15 वर्ष के दौरान रेग्युलर स्ट्रीम में सभी स्तरों पर 265.85 लाख छात्र–छात्राऐ शामिल (नामांकित) हैं। (यू.जी.सी. रिपोर्ट,2014–15)[8]

उच्च शिक्षा (Highar Education) का अर्थ समान रूप से सबको दी जाने वाले शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषयों में विशेष विशिष्ट तथा सूक्ष्म शिक्षा। उच्च शिक्षा, शिक्षा के उस स्तर का नाम है, जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो प्रायः ऐच्छिक होती है। इसके अंतर्गत स्नातक, परास्नातक एवं व्यवसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

उच्च शिक्षा 'व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास' है वर्तमान समय में उच्च शिक्षा को युवावस्था और संपूर्ण मानव समाज के कल्याण से जोड़कर देखा जाने लगा है। उच्च शिक्षा का उद्देश्य सदा ही मानव जाति को उच्च से उच्चतर तथा उच्चतर से उच्चतम पद की ओर अग्रसर करना रहा है।

आर० पी० पाठक ने अपनी पुस्तक (रविंद्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन, 2014) में कहां है कि "उच्च शिक्षा वह है जो केवल हमें सूचना ही नहीं देती वरन् हमारे जीवन को संपूर्ण सृष्टि के अनुकूलन बनती है।"[9] उच्च शिक्षा वह दिव्य प्रकाश है जो सूर्य के सुदृढ़ अज्ञान रूपी तिमिर को विलगित कर हमें ज्ञान का आत्मबोध वह आत्म दर्शन करती है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

उच्च शिक्षा की संरचनाः

प्रस्तावित रूप	तत्कालीन विद्यमान रूप
उच्च शिक्षा	एम.एस.सी., एम.एड., एम .काम.,बी.ई.एम.ए.,
प्रोफेसनल डिग्री	बी.एड., एल.एल.बी., एम.बी.बी.एस.
सामान्य डिग्री	बी.कॉम., बी.एस.सी., बी.ए.
अंडर ग्रेजुएट	डिग्री प्रदान करने वाले पाठ्यक्रम
पोस्ट ग्रेजुएट	पहली डिग्री के बाद वाला सभी कोर्स एम.ए., एल. एल.बी., एम.एस.सी.आदि

स्रोतः आल इण्डिया सर्वे हायर एजुकेशन 2018–19.

उच्च शिक्षा का इतिहास–भारत देश में शिक्षा का इतिहास काफी पुराना है। जब विश्व के तथाकथित विकसित देशों का नामो निशान नहीं था, तब हमारे यहाँ वेद जैसे गूढ़ ग्रंथों का स्वरूप प्राप्त हो चूका था। जिसके अंदर निहित समस्त ज्ञान विज्ञान को आज भी दर्शाया नही जा सका अर्थात् भारत में शिक्षा विदेशियों की देन नहीं है वरन् भारत शिक्षा के क्षेत्र में स्वयं में काफी समृद्ध रहा है । डॉ.एफ.डब्ल्यू.थामस(1955) के शब्दों में "भारत में शिक्षा का कोई विदेशी पौधा नहीं है, संसार का कोई भी ऐसा देश नहीं जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम का इतने प्राचीन समय में अविर्भाव हुआ हो या जिसने इतना चिरस्थायी और शक्तिशाली प्रभाव डाला हो"[10]

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम् सभ्यताओं में एक है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय सभ्यता उस समय भी विश्व की अन्य सभ्यताओ से उन्नत एवं समृद्ध थी। जिन पर निश्चय ही तत्कालिन समृद्धि के मूल में शिक्षा का योगदान अवश्य रहा होगा, क्योंकि शिक्षा और समाज तो एक दूसरे पर आश्रित हैं। यद्दपि भारत में औपचारिक शिक्षा का बीजारोपण ब्रिटिश काल में हुआ था। परन्तु उसके सुसम्बध्द स्वरूप के दर्शन, वैदिक काल के आरम्भ से होते है। इसका मूल कारण शायद तत्कालीन शिक्षा पद्धति का मौखिक स्वरूप था, क्योंकि भारतीय लिपि पद्धति का विकास काफी बाद में हुआ और उसके बाद ग्रंथों को लिपिबद्ध किया गया । इससे पूर्व का समस्त साहित्य मौखिक रूप से दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तर किया गया जिसमें समृद्ध परिदृश्य काफी उतार चढ़ाव का रहा है। जिसने भारत की सामाजिक व्यवथा पर भी अपना प्रभाव डाला। जिसकी वजह से भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भी समय के अनुसार अनेकानेक परिवर्तन हुए तथा शिक्षा का प्रसार अनवरत रूप से जारी रहा। भारत के इतिहास से स्पष्ट होता है कि भारत का शिक्षा की जड़े विदेशी नहीं है। विश्व की सभी सभ्यताओं के इतिहास का अध्ययन करते समय हम जितना प्राचीन की ओर जाते है वहाँ ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसका जो ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय से उत्पन्न हुआ हो, या जिसने इतना स्थाई और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक हमारे शिक्षा की धारा अब भी बनी आ रही है। विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं के इतिहास का अध्ययन करते समय हम जितनी प्राचीन की ओर जाते हैद्य महिलाओं का समाज में उतना ही असंतोष जनक स्थान पाते हैं। किंतु हिंदू सभ्यता इस दृष्टि से अनोखी है। क्योंकि इसमें हम समान नियम में अपवाद के दर्शन पाते है। जितने ही प्राचीन काल में हम जाते और देखते हैं हिंदू समाज में अनेक क्षेत्रों में नारी का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण दृष्टिगत होता रहा है। परन्तु उत्तरवैदिक काल से मध्यकालीन युग तक के सफर में तमाम रूढ़िया एवं विदेशी आक्रंतोओं से सबसे ज्यादा महिलाओं एवं उनकी शिक्षा प्रभावित हुई । लेकिन प्रस्तुत शोध विषय की प्रकृति के अनुसार निम्नलिखित ढंग से महिला शिक्षा के काल विभाजन करना सर्वाधिक उपयुक्त होगा।

वैदिक कालीन भारत में महिला शिक्षा– वैदिक काल(1500–600) में शिक्षा शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया। जैसे विद्या, ज्ञान, बोध और विनय । वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ईश्वर भक्ति एवं धार्मिक भावना का विकास, चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्य का बोध, सामाजिक कौशल में वृद्धि एवं राष्ट्रीय संस्कृत का संरक्षण एवं प्रसार था । वैदिक काल में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य को था। जिन्हें क्रमशः 8, 11 और 12 वर्ष की आयु में शिक्षण संस्था में प्रवेश दिया जाता था प्राचीन वैदिक काल में शिक्षा की अवधि 12 वर्ष थी। पाठ्यक्रम में पराविद्या और अप्रविद्या दोनों को स्थान प्राप्त था। पराविद्या में वेद, वेदांग, पुराण, दर्शन, उपनिषद् आदि, अध्यात्मिक विषय थे। अपराविद्या में इतिहास, तर्कशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, भौतिकशास्त्र आदि, लौकिक विषय थे छात्र गुरु से मंत्रो को सुनते थे। उनके विचारों का अनुकरण करते थे, और पाठ्य विषयों को दोहराते थे। शिक्षा संस्थान के रूप में गुरुकुल या ऋषिकुल ऋषि आश्रम चरण उपनिषद चरक और परियोजना थे। शिक्षा का माध्यम देव भाषा संस्कृति था गुरु शिष्य संबंध उच्च कोटि के थे शिष्य गुरु को देव तुल्य समझता था। और गुरु शिष्य को पुत्रवत मानते थे। वैदिक काल में मैत्री, गार्गी, लोपामुद्रा आदि। विख्यात नारियों का नाम सर्वोपरि है। यह नारी सशक्तिकरण का एक उचित उदाहरण है।[11]

उत्तर वैदिक काल में महिला शिक्षा– उत्तर वैदिक काल (1000–600) में समाज में कई बदलाव आए, जिससे महिला शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। जहाँ ऋग्वैदिक काल में महिलाये शिक्षित और स्वतंत्रत थीं, वहीं उत्तर वैदिक काल में उन्हें शिक्षा से वंचित किया जाने लगा। उपनयन संस्कार जो पहले लड़कियों को भी दिया जाता था, अब केवल पुरुषों तक सीमित हो गया। इस काल में पितृसत्तात्मक सोच और धार्मिक नियमों के चलते महिलाओं की भूमिका केवल घरेलु कार्यों तक ही सिमटने लगी थी।[12]

मध्यकालीन भारत में महिला शिक्षा– मध्यकाल का समय 16वीं से 18वीं शताब्दी तक माना जाता है। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में जितना ह्रास हुआ। उसे हमारा सामाजिक इतिहास एक कलंक के रूप में संभवतः कभी नहीं भूलेगा। यह सच है कि 11वीं शताब्दी के आरंभ से ही भारतीय समाज पर मुस्लिमों का प्रभाव बढ़ाने के कारण भारतीय संस्कृति की रक्षा करना आवश्यक हो गया था। महिलाओं पर तमाम तरह के बन्धन लगा दिए गये और उन्हें घर से बाहर निकलना बंद कर दिया गया। इस काल में रक्त की पवित्रता को इतना संकीर्ण कर दिया गया कि लड़कियों का विवाह नग्निका (5 – 6वर्ष) के रूप में कर देना अच्छा समझा जाने लगा। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह पुनर्विवाह निषेध, स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखना, तथा लड़कियों को संपत्ति के उत्तराधिकार से वंचित रखना जैसे इस युग में तमाम कुरीतियों सामने आयीं। अतः इस युग को स्त्री जाति के लिए काला युग कहना अधिक उपयुक्त होगा।[13]

ब्रिटिश कालीन भारत में महिला शिक्षा – यूरोपीय विद्वानों ने 19वीं सदी में यह महसूस किया था। कि हिन्दू महिलाएं "स्वाभाविक रूप से मासूम" और अन्य महिलाओं से 'अधिक सच्चरित" होती हैं। अंग्रेजी शासन के दौरान राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले आदि जैसे कई सुधारकों ने महिलाओं को उत्थान के लिए लड़ाइयां लड़ी, हालांकि इस सूची से पता चलता है कि ब्रिटिश राज युग में अंग्रेजों का कोई भी सकारात्मक योगदान नहीं था, यह पूरी तरह सही नहीं है। क्योंकि मिशनरियों

की पत्नियॉ जैसे कि मौल्टा नी मीड और उनकी बेटी एलिजा काल्डवेल नी मौल्ट को दक्षिण भारत में लड़कियों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए आज भी याद किया जाता है। यह एक ऐसा प्रयास था जिसकी शुरुआत में स्थानीय स्तर पर रूकावटों का सामना करना पड़ा। क्योंकि इसे परंपरा के रूप में अपनाया गया था। 1829 में गवर्नर– जनरल विलियम बैटिंग की तहत राजा राममोहन राय के प्रयास सती प्रथा के उन्मूलन का कारण बने। विधवाओं की स्थिति को सुधारने में ईश्वर चंद्र विद्यासागर के संघर्ष का प्रणाम विधवा पुनर्विवाह 1856 के रूप में सामने आया। कई महिलाएं सुधारकों जैसे पंडित रमाबाई ने भी महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य को हासिल करने में मदद किया ।[14]

स्वतंत्र भारत में महिला शिक्षा– स्वतंत्र भारत की निरंतर बदलती नवीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता थी। जो नवयुवकों को एक नई दिशा प्रदान करें जिससे भारत को विश्व में एक निश्चित स्थान दिला सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने 4 नवंबर 1948 में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की। आयोग का मुख्य उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना और उन सुधारो तथा विस्तरों के विषय में सुझाव देना जो देश की वर्तमान तथा भावी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वांछनी था। 1947 ईस्वी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के अवसर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था "कि विश्वविद्यालय का दायित्व मानवता, सहनशीलता, तर्क, विचारों का विकास एवं सत्य की खोज करना है।"[15]

निष्कर्ष एवं सुझाव– भारतीय समाज में महिला शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं उच्च शिक्षा में भारतीय महिलाओं की स्तिथि में काफी सुधार हुआ हैं वैदिक काल से लेकर स्वतंत्र भारत तक महिला शिक्षा को काफी सराहा गया है। फिर भी अगर देखा जाय तो वैदिक काल में महिला शिक्षा अच्छी थी लेकिन धीरे– धीरे उत्तर वैदिक काल आते ही थोड़ा कम फिर मध्यकाल और भी कम हो गया। अंग्रेजी शासन के दौरान राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले आदि जैसे कई सुधारकों ने महिलाओं को उत्थान के लिए लड़ाइयां लड़ी,। जहाँ 2001 की जनगणना के अनुसार महिला शिक्षा 53.7: थी, वही 2011 की जनगणना महिला शिक्षा 64.6: हो गयी । महिला शिक्षा में सकारात्मक परिणमों में वृद्धि हुई है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हन्फी एम.ए., हन्फी एस.ए.,(2014) स्त्री शिक्षा. सिकन्दरा आगरा श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरारू पृष्ठ संख्या 150.
2. हन्फी एम.ए., हन्फी एस.ए.,(2014) स्त्री शिक्षा. सिकन्दरा आगरा श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरारू पृष्ठ संख्या 167.
3. हन्फी एम.ए., हन्फी एस.ए., (2014) स्त्री शिक्षा. सिकन्दरा आगरा श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरारू पृष्ठ संख्या 176.
4. Mishra, Bijoya, (2011) Higher Education of SC/ST Girls New Delhi Gyan Publishing House, पृष्ठ संख्या 230.
5. Source: census of India Registrar General] India-
6. खींची श्री सत्यनारायण, भारत में महिला शिक्षा की वर्तमान स्थिति 2022,International Journal of Education पृष्ठ संख्या नं.6.
7. Source: Educational Statistics at a Glance 2016-
8. सिंह वी.एन., (2018) नारिवाद, जवाहर नगर जयपुर रावत पब्लिकेशन्स, पृष्ठ संख्या नं. 440.
9. Source: Census of India Registrar General] India-
10. सिंह वी.एन.(2018) नारिवाद, जवाहर नगर जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स पृष्ठ संख्या नं. 460.
11. आहूजा राम, (2016) सामाजिक समस्याएं , जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स,जवाहर नगर, पृष्ठ संख्या नं. 331.
12. वही पृष्ठ संख्या नं. 335.
13. वही पृष्ठ संख्या नं. 442.
14. स्रोतः आल इण्डिया सर्वे हायर एजुकेशन 2018–2019.
15. George, Ritzer (2021)

*****